International Journal of Information Movement Vol.1 Issue XII (April 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 85-87

हिन्दी निर्गुणवादी साहित्य और संत रैदास

श्रीमती प्रमिला देवी
प्राध्यापिका हिंदी विभाग
कन्या महाविद्यालय, खरखौदा
सोनीपत ।
E-mail: permila10478@gmail.com

1.0 परिचय

हिंदी संत साहित्य में गुरु रामानंद का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसिद्ध विद्ववान फर्कुहर का कहना है कि परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि पहले–पहल रामानंद जी ही अध्यात्म रामायण और अगस्त्य सुतीक्ष्ण संवाद दक्षिण से ले आए थे । निस्संदेह उनके संप्रदाय में इन ग्रंथों का बड़ा समादर है । रामानंद के गुरु राघवानंद थे । भक्तमाल में नाभादास जी ने गुरु राघवानंद को ही रामानंद का गुरु माना है । गुरु रामानंद को उदार दृष्टि और व्यापक भक्ति चेतना अपने गुरु से उत्तराधिकार के रूप में ही मिली थी । ''नाभादास जी के भक्तमाल में इनके बारह शिष्यों की चर्चा है । ये हैं – अनंतानंद, सुखानंद, सुरसुरानंद, नरहर्यानंद, भावानंद, पीपा, कबीर, सेना, धना, रैदास, पद्मावती और सुरसुरी।''1 इनमें से कई भक्तों को तथाकथित छोटी जातियों से उत्पन्न कहा जाता है । उस काल में उच्च समझे जाने वाले वर्ण के लोग छोटी समझी जाने वाली जातियों के प्रति जिस दृष्टि से देखते थे, उसे देखते हुए रामानंद का अद्भुत साहस, मानव–प्रेम और औदार्य आश्चर्यचकित करने वाले हैं ।

रामानंद के शिष्य कहे जाने वाले अन्य संतों में कुछ थोड़े से ही ऐसे हैं, जिन्हें साहित्य के इतिहास में विवेचनीय समझा जा सकता है । ''इनमें प्रथम और प्रमुख तो चमार जाति के भूषण, रैदास है जिनकी कोई पूरी पुस्तक अभी तक उपलब्ध नहीं है, लेकिन उनकी फुटकल वाणियाँ प्राप्त हुई हैं ।''2 इन वाणियों से जान पड़ता है कि वे जाति के चमार थे, उनके परिवार के लोग बनारस के आसपास ही ढोर ढोने का काम करते थे । एक परंपरा के अनुसार वे कबीर से उम्र में बड़े थे । कहते हैं एक बार जब किसी ने कबीर से भगवत् प्राप्ति का रास्ता पूछा तो उन्होंनें उत्तर दिया कि ''मैं तो छोटा बच्चा था, माँ की गोद में बैठकर गंतव्य स्थान पर पहुँच गया, रास्ता रैदास को मालूम है क्योंकि माँ ने उसके सिर पर एक गठरी भी रख दी थी।3 कबीर की इस कथित उक्ति का यह अर्थ लगाया जाता है कि वे रैदास से उम्र में छोटे थे । सिर पर गठरी ढोकर लाने का अर्थ यह है कि उन्होंनें बड़ी कठिनाइयों से जीविका उपार्जन करते हुए भगवद्भजन का रास्ता अपनाया था ।

परंतु रैदास का संबंध मीराबाई से भी बताया जाता है । मीराबाई ने बड़ी भक्ति के साथ अपने भजनों में इनका नाम लिया है। इनका कोई पृथक् संप्रदाय नहीं है, किंतु फर्रूखाबाद जिले के 'साधो' संप्रदायवालों को इनकी परंपरा में माना जाता है । कहा जाता है कि रैदास के शिष्य उदयदास थे और उनके शिष्य वीरभानु थे, जिन्होंनें पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य संप्रदाय की स्थापना की थी । इन सब बातों पर विचार करने से यह जान पड़ता है कि ये कबीर से कुछ बाद में उत्पन्न हुए होंगे । संभवतः सन् इस्वी की पंद्रहवीं शताब्दी के मध्यकाल में यह वर्तमान थे । आदिग्रंथ में इनके 100 के करीब पद संगृहित हैं । बोलवेडियर प्रेस से इनकी वाणियों का जो नया संग्रह निकला है, उसमें कुछ नए पद भी हैं । दोनों पदो ंके संग्रहों में पाठ–भद भी हैं । इन्हीं दोनों संग्रहों के आधार पर रैदास जी की वाणी पर विचार किया जा सकता है । उपलब्ध वाणियों में ऐसा कुछ नहीं है जिससे यह समझा जाए कि वे सगुणमार्ग के विरोधी थे, परंतु स्वर उनका निर्गुणवादियों का ही है ।

2.0 रैदास की विशेषताः

रैदास के भजनों में अत्यंत शांत और निरीह भक्त हृदय का परिचय मिलता है । साधारणतः निर्गुण संतों में कुछ–न–कुछ सुरति, निरति और इंगला, पिंगला का विचार आ ही जाता है । रैदास के कुछ भजनों में भी वे स्पष्ट आए हैं, परंतु रैदास की वाणियाँ इन उलझनदार बातों से मुक्त हैं । यद्यपि उनमें अद्वैत वेदांतियों के परिचित उपमान तथा नाथों और निरंजनों के सहज, शून्य आदि शब्द भी आ जाते हैं, फिर भी उनमें किसी प्रकार की वक्रता या अटपटापन नहीं है और न ही ज्ञान के दिखावे का आडंबर ही उदाहरणार्थ –

''माधो भरम कैसे न बिलाई, ताते द्वैत दरसे आई ।
कनक कुंडल सूत पर ज्यों रजु भुअंग भ्रम जैसा ।
जल तरंग पाहन प्रतिभा ज्यों ब्रहम गति ऐसा ।
सदा अतीत ज्ञानधन वर्जित निर्विकार अविनासी ।
कह रैदास सहज सुन्न संत जीवन्मुक्ति निधि कासी ।''4

इन पदों में एक प्रकार की ऐसी आत्म–निवेदन और परमात्म–विरह की पीड़ा है जो केवल तत्वज्ञान की चर्चा से प्राप्त नहीं हो सकती । वह ऐसे हृदय की अनुभूति है जो ज्ञान की चर्चा से जटिल नहीं बना है, बल्कि प्रेमानुभूति से अत्यंत सहज हो गया है । उन्होंनें एक स्थान पर कहा है कि ''हे भगवान ! यह भी कैसी प्रीति है कि तुम मुझे देख रहे हो पर मैं तुम्हें नहीं देख पा रहा हूँ । इस

विसदृश प्रीति की जब सोचता हूँ तो मेरी मति–बुद्धि खो जाती है । परस्पर की प्रीति तो ऐसी होनी चाहिए कि तुम देखो और मैं भी तुम्हें देखूँ ।''5

अनांडबर, सहज शैली और निरीह आत्म समर्पण के क्षेत्र में रैदास के साथ कम संतों की तुलना की जा सकती है । यदि हार्दिक भावों की प्रेषणीयता काव्य का उत्तम गुण हो तो निस्संदेह रैदास के भजन इस गुण से समृद्ध हैं । सीधे–सादे पदों में संत कवि के हृद्भाव बड़ी सफाई से प्रकट हुए हैं और वे अनायास सहृदय को प्रभावित करत हैं । उनका आत्म–निवेदन, दैन्य भाव और सहजभक्ति पाठक के हृदय में इसी श्रेणी के भाव संचारित करते हैं । इसी को काव्य में प्रेषणीयता का गुण कहते हैं ।

3.0 संदर्भ :–

1. भक्तमाल, नृत्यलाल सील, कलकत्ता, 1873
2. सटीक–सखाराम भित्तेत, बम्बई, 1876
3. बीजक, पूरनदास कृत तृज्या टीका सहित, लखनऊ, 1892
4. रैदासजी की वाणी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, 1909 ई0
5. रैदास– रामायण, स्वामी सुखानंद गिरि, आगरा, 1925 ई0